हैं जो वस्तुओं को देखते वक्त पहने हुए चश्मे को, व्यक्तियों के संबंध-संपर्क में आते ही उतार देते हैं। अब पुरुषार्थ में तीव्रता लाने के लिए हमें सिर्फ इतना ही कष्ट उठाना होगा कि व्यक्तियों के संबंध-संपर्क में रहते भी इस चश्मे को पहन कर रखना है।

चश्मा उतर न जाए, इसके लिए क्या करें –

❖ दूसरों के अवगुण की तरफ बुद्धि तब जाती है जब अपनापन नहीं है। इसको जागृत करने के लिए सदा इस स्मृति में रहें कि हम सभी आत्मायें एक शिव पिता की संतान, आपस में भाई-भाई हैं।

❖ जब तक साक्षी दृष्टि नहीं है तब तक नज़र कहीं भी उलझती रहेगी। साक्षीद्रष्टा बनने के लिए इस बात की गहरी धारणा हो कि इस बेहद नाटक के हर दृश्य और हर एक पात्रधारी का पात्र पूर्व नियोजित है, एक का पात्र न मिले दूसरे से, इसलिए सभी निर्दोष हैं।

❖ सदा स्मृति रहे कि मैं पूर्वज आत्मा हूँ और मेरा मुख्य गुण है क्षमा। तब औरों की गलतियाँ बचपन का खेल लगेंगी।

चश्मे से चमत्कार क्या दिखाई देगा?

❖ चमत्कार यह होगा कि अब तक जिनका विकराल रूप देखकर हम नफरत करते थे, दुखी-परेशान होते थे उसी व्यक्ति का सुंदर रूप सामने प्रत्यक्ष होगा। जहाँ देखो, वहाँ गुण-विशेषता ही दिखाई देने के कारण यह सृष्टि एक सुंदर रचना लगेगी और मन हल्का होकर रचयिता शिवपिता की महिमा के गीत गाने लगेगा।

❖ मन-बुद्धि से देहधारियों की स्मृति और अवगुण, कमी-कमज़ोरी रूपी कांटे हट जाने के कारण पुरुषार्थ में अति तीव्रता आयेगी। अब तक जिसका अवगुण हमारे पुरुषार्थ में विघ्न भासता था, वह भ्रम हमेशा के लिए मिट जायेगा।

❖ औरों के गुण-विशेषता देखते-देखते वे हमारे अंदर धारण होने के कारण हमें सर्वगुणसंपन्न, सोलह कला संपूर्ण बनने में मदद मिलेगी।

❖ विशेषताओं का वर्णन करने से आपस में स्नेह-प्यार अंकुरित होकर परिवार की एकता मजबूत होगी और चारों तरफ हल्कापन, उमंग-उत्साह फैलेगा।

❖ दूसरों के अंदर छिपी हुई विशेषता को पहचानना, उसको ईश्वरीय सेवा में लगाने के लिए उनको प्रेरणा और मदद देकर उनका भी जीवन श्रेष्ठ बनाना, ऐसी अनोखी सेवा का मौका मिलेगा। ❖

पवित्रता का उपहार

बगदीराम मदेल, रतलाम

शिव बाबा से मिलन मनाना, ख्याल था दिल में
अभी तक मिल न पाया, मलाल था दिल में
कैसे मिलन मनाते हैं, सवाल था दिल में
मिलन कब मनाऊँगा, बेहाल था दिल में
शिव बाबा से मिलन मनाया बहुत प्यार मिला है
पवित्रता से रहने का स्वर्णिम उपहार मिला है।

पवित्रता क्या चीज़ है, समझ न पाया था
परिवार में रहकर सिर्फ, परिवार बढ़ाया था
पवित्रता का अर्थ केवल, नहाने से लगाया था
ब्रह्माकुमारी दीदी ने समझाया, तब समझ में आया था
अब खुद समझकर समझाने का आधार मिला है
पवित्रता से .....

स्वनियंत्रण स्वयं पर रखना ज़रूरी है
पवित्र रहकर त्याग का फल चखना ज़रूरी है
पवित्रता की बोई फसल पकना ज़रूरी है
सौ टंच शुद्ध सोना हैं हम, परखना ज़रूरी है
बार-बार शिव बाबा से मिलने का अधिकार मिला है
पवित्रता से .....